डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

बगलामुखी साधना

एस-सीरीज

भक्ति सुगन्ध से ओतप्रोत

जीवन को सुगंधित आनन्ददायक एवं मंगलमय बनाने के लिये
प्रत्येक घर के लिए अनमोल अद्वितीय कैसेट्स . . .

कुछ प्रश्नों के उत्तर तो दें

* क्या घर का वातावरण दूषित हो रहा है?
* क्या घर की शांति और आनन्द खत्म हो गया है?
* क्या घर में भौतिकता की काली छाया घर के सदस्यों को खोखला कर रही है?
* क्या लड़के-लड़कियां भौतिकता में लिप्त होकर आपके जीवन मूल्यों को खत्म कर दिया है?

जरूर आप ऐसा नहीं चाहते होंगे

और चाहते होंगे घर में आनन्ददायक वातावरण . . .
सुगंधित, सुरभित, आध्यात्मिक संगीत . . .
रॉक एवं रॉल की जगह भक्ति संगीत और प्रार्थना . . .
पूजा . . . ध्यान . . . एवं प्रातः कालीन आनन्ददायक वातावरण . . .
तो ये भव्य अद्वितीय कैसेट्स आपके . . . और केवल आपके लिये ही बनी है, घर में, ऑफिस मे या कार में कहीं भी देख लीजिये न!

* शिव महिम्न स्तोत्र (दो भागों में)		* हनुमान चालीसा
* गणपति स्तोत्र	* दुर्गा स्तोत्र	* महाकाली स्तोत्र
* भुवनेश्वरी स्तोत्र	* गुरु सहस्रनाम	* लक्ष्मी स्तोत्र

* प्रत्येक कैसेट का न्यौछावर – 30/–

गायन - कुमारी अर्पिता बनर्जी
संयोजन - रविन्द्र पाल
स्वर संयोजन - कनक पाण्डेय

:: सम्पर्क ::
मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291–32209, फैक्स : 0291–32010

प्रचण्ड तूफान से भी टक्कर लेने वाली

बगलामुखी साधना

अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार
जोधपुर

आशीर्वाद

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरिज

SCAN AnyScanner

© मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

संकलन - सम्पादन

श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

नवीन संस्करण	:	नवरात्रि, 1997
प्रति	:	1100
मूल्य	:	15/-
कम्प्यूटर वर्क	:	श्रीमती कनक पाण्डेय एवं सूरज डंगोल
संयोजन	:	डॉ० एस० के० बनर्जी
मुद्रक	:	सहारा इण्डिया मॉस कम्यूनिकेशन्स् नोएडा

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पुस्तिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। किसी भी सम्बंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पुस्तिका परिवार इस सम्बंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

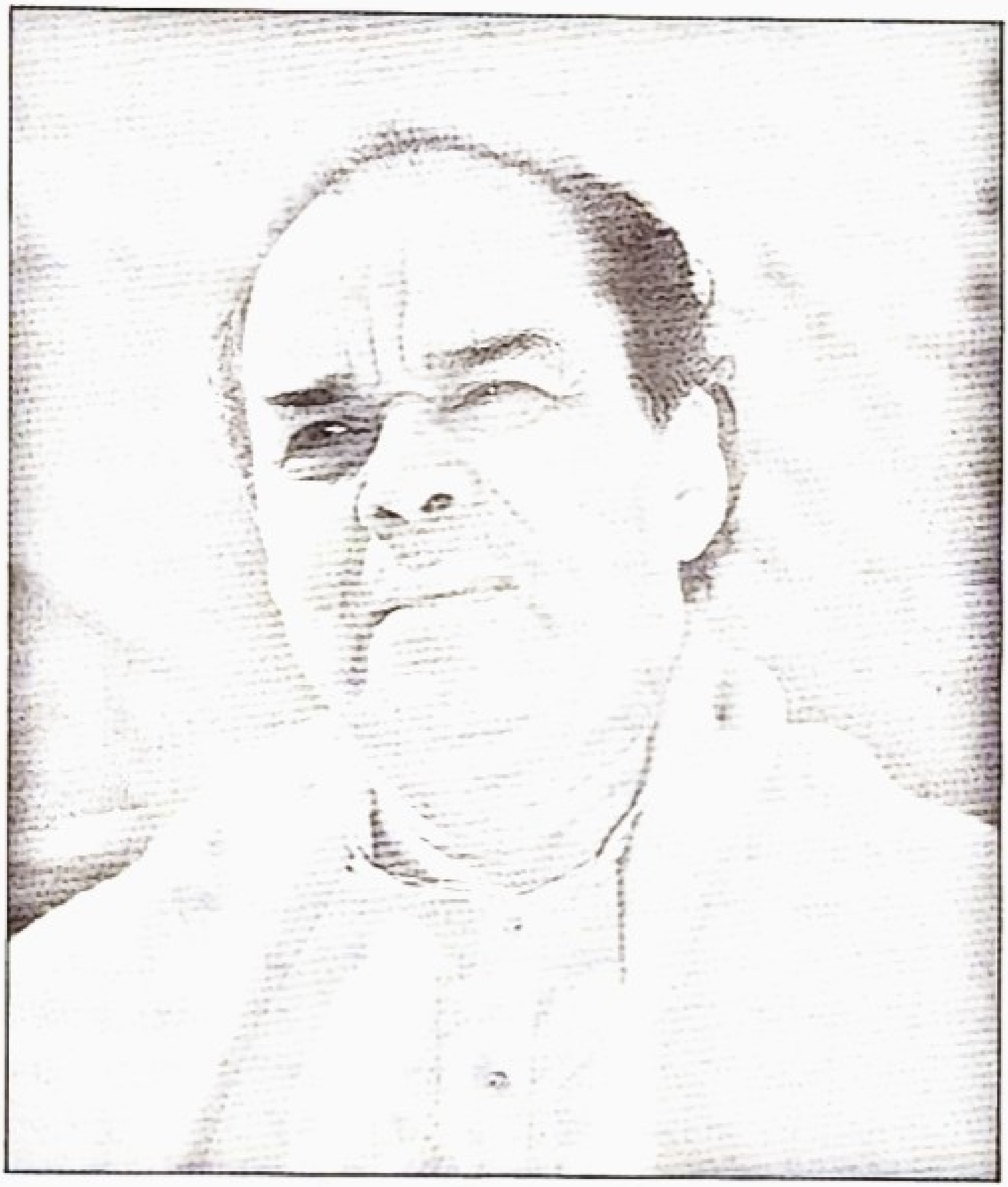

पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

AnyScanner

ह्लीं ब्रह्मास्त्राये विद्महे।
स्तम्भन बाणये धीमहि।
तन्नो बगला प्रचोदयात।।

* ब्रह्मास्त्र की अचूक क्षमता का बल तथा शत्रुओं को सहज ही स्तम्भित कर देने का प्रभाव लिए ही तो अवतरित होती हैं - पीताम्बरा बगलामुखी देवी अपने साधक के जीवन में।
* पीताम्बरा? दस महाविद्याओं में से सर्वाधिक प्रचंड महाविद्या भगवती बगलामुखी का विश्लेषण 'पीताम्बरा' क्यों?
* क्योंकि वे ही तो है पीताम्बर पटधारी भगवत् श्रीमन्नारायण की अभेद्य शक्ति, उनकी शक्तिमय सहचरी-पीताम्बरा!
* फिर साधक को इन भगवती बगलामुखी की साधना में प्रवेश करने से इतना भय क्यों? मन में जुगुप्सा को धारण करने का कारण ही क्या?
* ॐ सौवर्णासनसंस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुदगरपाशवज्ररशनां संविभ्रतीं भूषणै
र्व्याप्तागीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।
* सुवर्ण आसन पर स्वर्णिम आभा के साथ आसीन, पीतवस्त्रों के धारण किए हुए, मस्तक पर चंद्रमा को धारण करने वाली त्रिनेत्री देवी बगलामुखी का तो सम्पूर्ण स्वरूप ही मातृमय है। मातृमय स्वरूप से साधक को भय ही कैसा?
* उग्र तो वे साधक के जीवन की विसंगति-शत्रु के प्रति ही होती है। शत्रु बाह्य भी हो सकता है और अपने अंदर भी। रोग, शोक, तनाव, पीड़ा, दरिद्रता क्या हमारे अंदर के शत्रु नहीं?
* इन्हीं बिंदुओं पर तो आधारित है यह कृति . . .

प्रचण्ड तूफान से भी टक्कर लेने वाली

बगलामुखी साधना

भारतीय तंत्र-मंत्र साहित्य अपने-आप में अद्‌भुत, आश्चर्यजनक एवं रहस्यमय रहा है। ज्यों-ज्यों हम इसके रहस्य के मूल में जाते हैं, त्यों-त्यों हमें विलक्षण अनुभव होते हैं। इस साहित्य में कुछ तंत्र-मंत्र तो इतने समर्थ, बलशाली एवं शीघ्र फलदायी हैं, कि देख कर चकित रह जाना पड़ता है।

ऐसे ही यंत्रों में एक यंत्र है — बगलामुखी यंत्र, जो प्रचण्ड तूफान से भी टक्कर लेने में समर्थ है।

भारत के लगभग सभी तांत्रिकों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि बगलामुखी यंत्र के समान और कोई अन्य विधान नहीं है, जो कि इतने वेग से और तुरन्त प्रभाव दिखा सके। एक तरफ जहां यह यंत्र शीघ्र ही सफलतादायक है, वहीं दूसरी ओर विशेष अनुष्ठान एवं मंत्र-जप के द्वारा जो बगलामुखी यंत्र सिद्ध किया जाता है, वह तुरन्त कार्य सिद्धि में सहायता प्रदान करता है।

ब्रिटेन के प्रसिद्ध तंत्र विशेषज्ञ श्री समरफील्ड ने इसे मंत्रसिद्ध कर और इसका प्रभाव देख कर कहा था कि पूरे विश्व की ताकत भी इस यंत्र से टक्कर लेने में असमर्थ है, असहाय है।

दुर्लभ ग्रंथ मंत्र-महार्णव में इसके बारे में लिखा है —

ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि सद्यः प्रत्यय कारणम्।
यस्य स्मरणमात्रेण पवनोऽपि स्थिरायते।।

'इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद मात्र स्मरण से ही प्रचण्ड पवन भी स्थिर हो जाता है।'

भारत के श्रेष्ठ और अद्वितीय तांत्रिकों ने भी एक स्वर से इस यंत्र की सराहना की है –

जिस व्यक्ति के घर में यह यंत्र या जिस व्यक्ति ने अपनी भुजा पर इस यंत्र को बांध रखा है, उस पर कभी भी शत्रु हावी नहीं हो सकते, न वह जहर से मर सकता है, न उस पर आक्रमण से सफलता पाई जा सकती है, और न उसकी अकाल-मृत्यु ही संभव है।

– त्रिजटा अघोरी

आज के युग में जब पग-पग पर शत्रु हावी होने की चेष्टा करते हैं, और हर प्रकार से चारों तरफ शत्रु नीचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं, तब प्रत्येक उन्नति चाहने वाले व्यक्ति के लिए यह साधना या यह यंत्र धारण करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य समझा जाना चाहिए।

– किंकर बाबा

सारे यंत्रों में बगलामुखी यंत्र सर्वश्रेष्ठ है, अद्भुत प्रभावशाली है तथा किसी भी प्रकार के मुकदमे में पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

– स्वामी बोधत्रय जी

यंत्र तो भारत में सैकड़ों हैं, परन्तु यह यंत्र अपने-आप में महायंत्र है, और शत्रुओं का मान मर्दन करने में पूरी तरह से सक्षम है।

– स्वामी अरूपानंद जी

जो अपने जीवन में बिना किसी बाधा के प्रगति चाहता है, प्रगति से सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना चाहता है, उसके लिए बगलामुखी साधना या बगलामुखी यंत्र धारण करना आवश्यक है।

– मां भारती

इस यंत्र का ही यह प्रभाव है कि इसे तंत्र-मंत्र के क्षेत्र में सर्वोपरि मान्यता मिलती रही, और इसके बारे में शोध और प्रयोग प्राचीन काल से बराबर होता रहा है, आश्चर्य की बात तो यह है कि इस यंत्र का उपयोग जहां हिन्दू राजाओं ने अपने शत्रुओं के मर्दन के लिए किया, वहीं मुस्लिम शासकों ने भी इसका प्रयोग कर अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त की। रिचर्डब्रन के इतिहास में उल्लेख मिलता है कि औरंगजेब ने अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए बगलामुखी साधना कराई और सफलता

AnyScanner

प्राप्त की। हिन्दू शासकों में तो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त ने भी बगलामुखी साधना अपने तांत्रिकों से कराकर शत्रुओं पर विजय एवं सफलता प्राप्त की।

इसकी साधना से मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन एवं विद्वेषण प्रयोग भली-भांति सफलतापूर्वक सम्पन्न किए जाते हैं। जहां तक मेरा अनुभव है, इस मंत्र की साधना से बांझ स्त्री को मनचाही संतान प्राप्त करने में सहायता दी जा सकती है। दरिद्र व्यक्ति को लखपति बनाने के लिए मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है, और विपरीत मुकदमे में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है, इसके साथ ही साथ शत्रुओं का मान मर्दन कर उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

परन्तु भूल करके भी सामान्य व्यक्ति को इस प्रकार की साधना में नहीं बैठना चाहिए, क्योंकि यह साधना तलवार की धार के समान है, अत: यदि थोड़ी सी भी गलती हो जाती है, तो साधना करने वाला व्यक्ति ही समाप्त हो जाता है। मेरे अनुभव से, बिना पूरा ज्ञान प्राप्त किए, जिन लोगों ने इस साधना को प्रारम्भ किया, वे साधना काल में ही पागल होते देखे गए हैं, और बड़ी कठिनाई से उन्हें सामान्य अवस्था में लाया गया।

अत: सामान्य पंडित भी इस प्रकार की साधना सम्पन्न करने में हिचकता है। जो भी व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न करना चाहे, उसे चाहिए कि वह योग्य गुरु के निर्देशन में ही इस कार्य को सम्पन्न करे, और यदि पंडितों से यंत्र सिद्ध करवा कर धारण करना चाहे, तो उसे चाहिए कि योग्य पंडितों का चयन करके ही यह साधना सम्पन्न करवाये और इसमें किसी प्रकार की न्यूनता न रखे।

साधना काल में प्रत्येक साधक को दृढ़ता के साथ इनसे संबंधित नियमों का पालन करना चाहिए और वह किसी प्रकार की शिथिलता न बरते।

साधना काल में ध्यान रखने योग्य बातें

1. बगलामुखी साधना में साधक को पूर्ण पवित्रता के साथ मंत्र-जप करना चाहिए, और उसे पूरी तरह से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
2. साधक को पीले वस्त्र धारण करने चाहिए, धोती तथा ऊपर ओढ़ने वाली चादर दोनों ही पीले रंग में रंगी हुई हों।
3. साधक एक समय भोजन करे और भोजन में बेसन से बनी हुई वस्तु का प्रयोग अवश्य करे।
4. साधक को दिन में नींद नहीं लेनी चाहिए, न व्यर्थ की बातचीत करे और न किसी

स्त्री से किसी प्रकार का सम्पर्क ही स्थापित करे।

5. साधना काल में साधक बगलामुखी यंत्र बनाकर, उसे स्थापित कर उसके सामने मंत्र-जप करे।
6. साधना काल में साधक बाल न कटवाये और न क्षौर कर्म ही करे।
7. यह साधना या मंत्र-जप रात को ही होता है, अत: यह साधना रात के 10 बजे से प्रात: 4 बजे के बीच करें, परन्तु जो साधना सम्पन्न कर चुके हैं, वे साधक या ब्राह्मण दिन को भी मंत्र-जप कर सकते हैं।
8. साधना काल में पीली गौ का घी प्रयोग में लें तथा दीपक में जिस रूई का प्रयोग करें, उस रूई को पहले पीले रंग में रंग कर सुखा लें, और इसके बाद ही उस रूई को दीपक के लिए प्रयोग करें।
9. साधना में छत्तीस अक्षर वाला मंत्र प्रयोग करना ही उचित है और यही मंत्र शीघ्र सफलता देने में सहायक है।
10. साधना घर के एकान्त कमरे में, देवी मंदिर में, पर्वत शिखर पर, शिवालय में या गुरु के समीप बैठकर की जानी चाहिए।
11. इसके मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कई प्रयोग हैं, अत: गुरु से आज्ञा प्राप्त कर उनके बताए हुए रास्ते से ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए।
12. इसे तंत्रों में 'सिद्ध विद्या' कहा है, और इसके प्रयोग से प्रभाव तुरन्त दृष्टिगोचर होते हैं, अत: सावधानी के साथ ही इस प्रयोग को करना चाहिए।
13. मोक्ष प्राप्ति के लिए क्रोध का स्तम्भन आवश्यक है, और यह इस प्रयोग से संभव है, अत: मोक्ष प्राप्ति के लिए भी इसका प्रयोग साधक और वैष्णव लोग करते हैं।
14. साधना में कुलाचार का पूजन, वीर साधना, चक्रानुष्ठान अवश्य ही करना चाहिए, जिससे कि कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके।

SCAN AnyScanner

बगलामुखी यंत्र एवं साधना

भगवती श्री बगला की यंत्र साधना में पूजन आवश्यक है, जो कि चने की दाल से बनाया जाता है अथवा ताम्र पत्र पर या रजत पत्र पर इसे अंकित कर इसका पूजन किया जा सकता है। इस संबंध में तंत्र ग्रंथों में स्पष्ट है-

मध्ये योनिं समालिख्य तद्-बाह्ये तु षडस्त्रकम्,
तद् बाह्येऽष्टदलं पद्म तद् बाह्ये षोडशच्छदम्
चतुरस्त्र-त्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोप शोभितम्।।

ऊपर मैंने बगलामुखी यंत्र बनाने की विधि स्पष्ट की है, इस प्रकार की विधि से साधक को बगलामुखी यंत्र बना लेना चाहिए, इसके बाद ही इस पर पूजन प्रयोग तथा संजीवनी मुद्रा के साथ-साथ, प्राण-प्रतिष्ठा करके एक लाख या पांच लाख मंत्र-जप से इसे सिद्ध किया जाता है।

स्वामी श्री अनन्तानन्दनाथ इस विद्या के श्रेष्ठ जानकार हैं और उन्होंने बगला महाशक्ति का रुद्रयामलोक्त अनुष्ठान सिद्ध किया हुआ है।

केवल इस साधना से वे श्रेष्ठतम साधक, सम्पूर्ण भारत में विख्यात और सभी शास्त्रों के पारदर्शी विद्वान होने के साथ-साथ संगीत विद्या के श्रेष्ठतम उन्नायक हैं।

यद्यपि इस साधना की तीन पद्धतियां प्रचलित हैं, जिसमें रुद्रयामलोक्त पद्धति कठिन होने के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ कही जाती है, और इस प्रकार का मंत्र प्रयोग करके किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। स्थानाभाव से मैं बगलामुखी

AnyScanner

साधना का पूर्ण प्रयोग यहां नहीं दे रहा हूं, परन्तु प्रामाणिक बगलामुखी मंत्र और अत्यन्त गोपनीय ब्रह्मास्त्र विद्या तथा बगलामुखी कवच स्पष्ट कर रहा हूं –

विनियोग

दाहिने हाथ में ज़ल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें –

अस्याः श्री ब्रह्मास्त्र-विद्या बगलामुख्या नारद ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमो मुखे। श्री बगलामुखी देवतायै नमो हृदये। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। ॐ नमः सर्वांगे श्री बगलामुखी-देवता-प्रसाद सिद्धयर्थे न्यासे विनियोगः।।

आवाहन

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बगलामुखी सर्व-दुष्टानां मुख स्तम्भिनि सकल-मनोहारिणि अम्बिके इहागच्छ सन्निधिं कुरु सर्वार्थं साधय साधय स्वाहा।।

ध्यान

**ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररशनाः संविभ्रतीं भूषणैः।
र्व्याप्तागीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।**

मंत्र

**ॐ ह्रीं बगलामुखि, सर्वदुष्टानां
वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय
बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ फट्।।**

वस्तुतः इस छत्तीस अक्षरों वाले मंत्र में गजब की शक्ति और प्रभाव है, जो कि विश्व में अन्यतम है, इसका एक लाख या पांच लाख मंत्र-जप कर इसे सिद्ध कर लिया जाता है, और फिर पुरश्चरण के लिए चम्पक-कुसुम से दशांश यज्ञ, तथा इसका दशांश तर्पण करना चाहिए।

जीवन में किसी भी प्रकार की बाधा हो, या परेशानी हो, व्यापार में दिवालिया होने की स्थिति आ रही हो, या शत्रु हावी हो रहे हों, या मुकदमे में विजय की सम्भावना क्षीण हो, तो इस प्रकार का अनुष्ठान सम्पन्न कराना चाहिए।

SCAN AnyScanner

बगलामुखी माला मंत्र

बगलामुखी साधना में कहा गया है कि बगलामुखी माला-मंत्र अपने आप में पूर्ण है, और जो साधक मात्र नित्य बगलामुखी माला मंत्र-जप कर लेता है, उसके जीवन में कोई बाधा व्याप्त नहीं होती। पाठकों के हित के लिए यह परम गोपनीय मंत्र भी मैं इन पन्नों के माध्यम से पहली बार उजागर कर देता हूं।

मंत्र

ॐ नमो भगवति, ॐ नमो वीरप्रतापविजय भगवति, बगलामुखि! मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां मुद्रय मुद्रय, बुद्धिं विनाशय विनाशय, अपरबुद्धिं कुरु कुरु, आत्मविरोधिनां शत्रूणां शिरो, ललाटं, मुखं, नेत्र, कर्ण, नासिकोरु, पद, अणु-अणु, दन्तोष्ठ, जिह्वा, तालु, गुह्य, गुदा, कटि, जानु, सर्वांगेषु केशादिपादान्तं पादादिकेशपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, खें खीं मारय मारय, परमंत्र, परयंत्र परतन्त्राणि छेदय छेदय, आत्ममंत्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, ग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय, दुःखं हर हर, दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्वमंत्रस्वरूपिणि दुष्टग्रह

भूतग्रह पाषाणग्रह सर्वचाण्डालग्रह यक्षकिन्नरकिम्पुरुषग्रह भूतप्रेत पिशाचानां शाकिनी डाकिनीग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय, वार्तालि! मां रक्ष रक्ष, दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय, उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पाताल दिशं बन्धय बन्धय, बगला परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकल रोगान् विनाशय विनाशय, शत्रु पलायनम् पंचयोजनमध्ये राजजनस्वपचं कुरु कुरु, शत्रून् दह दह, पच पच, स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय, ह्रीं फट् स्वाहा।।

वस्तुत: यह मंत्र सिद्ध करने के बाद यदि साधक इसका नित्य प्रयोग करता है, तो उसे जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

जहां तक मेरा अनुभव है, और यह प्रामाणिक अनुभव है कि वर्तमान समय में अधिकांश नेता, अभिनेता और उच्च स्तर के व्यापारी तथा उद्योगपति अपनी बांह पर बगलामुखी यंत्र धारण किए रहते हैं। मैंने स्वयं भी इस प्रकार के कई उच्च उद्योगपतियों को यंत्र सिद्ध करके दिया है, और उन्होंने इसका तुरंत आश्चर्यजनक प्रभाव देखकर इसके प्रति पूर्ण श्रद्धा व्यक्त की है।

वस्तुत: यह साधना अत्यन्त कठिन है, और यह अत्यन्त प्रभावपूर्ण होने के साथ-साथ सावधानी युक्त है, क्योंकि यदि पूर्ण शुद्धता के साथ और पूर्ण प्रामाणिक उच्चारण के साथ मंत्र-जप या साधना नहीं की जाती, तो स्वयं साधक को ही नुकसान हो जाता है।

फिर भी इसके महत्व को भूल नहीं सकते, कलियुग में इसका प्रभाव आश्चर्यजनक है, अद्भुत है, चमत्कारी है।

बगलामुखी कवच

बगलामुखी कवच अपने-आप में विश्वविख्यात है। इसकी उपासना और साधना सभी प्रकार के व्यक्ति करते हैं, और इसका पूरा लाभ उठाते हैं। बगलामुखी कवच की विशेषता यह है, कि यह कवच मुख्यत: शत्रुहन्ता है। शत्रुओं का दमन करने, शत्रुओं को परास्त करने तथा मुकदमे आदि में विजय प्राप्त करने के लिए इससे बढ़कर कोई अन्य कवच नहीं है। यदि कोई व्यक्ति, किसी षड्यंत्र का शिकार हो गया हो, तो उसे अवश्य ही बगलामुखी कवच का पाठ करना चाहिए। यों भी मेरी धारणा तो यह है कि शत्रु चाहे वह व्यक्ति के रूप में हो, चाहे रोग के रूप में और चाहे मानसिक परेशानियों के रूप में हो, उसको शान्त करने एवं परास्त करने के लिए इससे बढ़कर और कोई उपाय नहीं है। सामान्यत: कोई न कोई शत्रु हमारे जीवन में बना ही रहता है, चाहे वह शत्रु दैहिक् हो, दैविक हो अथवा भौतिक हो। हमारे लिए यह जरूरी है कि हम नित्य एक बार बगलामुखी कवच का पाठ करें।

नीचे मैं कुछ ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण दे रहा हूं, जिनको बगलामुखी कवच से लाभ हुआ है, और उनके जीवन में बगलामुखी कवच ने एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा अदा किया है।

दिल्ली के एक प्रसिद्ध बैंक के मैनेजर एक षड्यंत्र के शिकार हो गए थे, उनकी कोई गलती न होने पर भी वे षड्यंत्र में उलझ गए। इसका तुरन्त प्रभाव यह हुआ कि उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। उन दिनों उनकी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक स्थिति डांवाडोल हो रही थी। ऐसे ही दिनों में उनका टेलीफोन मेरे पास आया और

SCAN AnyScanner

उन्होंने बताया कि मैं व्यर्थ में ही उलझ गया हूं, जबकि इस प्रकार की कोई बा मेरे जीवन में नहीं है, न तो मैंने किसी प्रकार का गबन किया है, और न इस षड्यंत्र म मैं किसी भी रूप में शामिल हूं, पर पता नहीं ऐसी कौन-सी ग्रह-स्थिति मेरे जीवन में आ गई है, जिससे मैं इस चक्रव्यूह में उलझ गया हूं। अब आप ही मेरे रक्षक हैं, कोई उपाय मुझे बताइये, जिससे कि मैं इस चक्रव्यूह से छुटकारा पा सकूं।

मैंने उसी समय टेलीफोन पर सूचित किया कि तुम्हें नित्य बगलामुखी कवच का पाठ करना चाहिए। इस कवच का ज्यादा प्रभाव तब होता है, जब पाठ करते समय हम पीले वस्त्र ही धारण करें। ज्यादा अच्छा यही रहता है कि धोती तथा अंगोछा पीले रंग में रंगे हुए हों।

दूसरे ही दिन से उसने मेरी आज्ञा को मानते हुए मेरे निर्देशों के अनुसार बगलामुखी कवच का पाठ आरम्भ कर दिया। उनको तथा उनके मित्रों को यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उसी दिन से उनकी स्थिति में सुधार होना प्रारम्भ हो गया, तथा मात्र एक महीने के भीतर-भीतर उनके ऊपर जितने अभियोग थे, वे वापिस ले लिए गए तथा सम्मान के साथ उन्हें पुन: नौकरी में ले लिया गया।

उस दिन से वे बगलामुखी कवच के अनन्य भक्त बन गए हैं, और जब भी वे अपने किसी मित्र को किसी भी प्रकार की मुसीबत में देखते हैं, तो उन्हें इसी बगलामुखी कवच का पाठ करने की सलाह देते हैं। इस प्रकार से उन्होंने अपने सैकड़ों मित्रों की सहायता की है, तथा इस बगलामुखी कवच के माध्यम से उनकी समस्याओं को दूर करने में सहायक हुए हैं।

इन्दौर के रामसहाय जी मेरे अच्छे परिचितों में से हैं। एक बार उनके ही एक रिश्तेदार ने उन पर झूठा मुकदमा दायर कर दिया। धीरे-धीरे स्थिति अत्यन्त विकट हो गई , ऐसा लगने लगा कि इसका फैसला रामसहाय जी के विरुद्ध हो जाएगा और उन्हें अवश्य ही जेल हो जाएगी।

जब वे इस प्रकार की गम्भीर मानसिक यंत्रणाओं से ग्रस्त थे, तो वे जोधपुर मेरे पास आए और उन्होंने मुझे अपनी सारी स्थिति से अवगत कराया। साथ ही मुझे कहा कि यदि मैं इस मुकदमे में सफल नहीं हुआ, तो मुझे जेल अवश्य हो जाएगी और जेल जाने की अपेक्षा मैं आत्महत्या को ज्यादा श्रेयस्कर समझता हूं, ऐसा कहते-कहते उनकी आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे।

मैंने उन्हें सान्त्वना दी और विश्वास दिलाया कि यदि आप सही रास्ते पर हैं, तो आपका बाल भी बांका नहीं हो सकता, अच्छा हो आप बगलामुखी कवच का

.न पाठ नित्य करने लग जाएं। मैंने उन्हें बगलामुखी कवच की एक प्रति दी, और किस प्रकार से पाठ किया जाना चाहिए, इसकी विधि भी समझाई।

लगभग महीने भर बाद उनका पत्र आया कि पंडित जी! आपने जो मुझे अद्‍भुत बगलामुखी कवच दिया था, उसी का यह प्रभाव है कि आज मैं मुकदमे में पूर्णत: सफल हो गया हूं और एक बार पुन: मुझ में जीने की उमंग बढ़ गई है। यह बगलामुखी कवच अपने - आप में अद्‍भुत है। इस मुकदमे में जीतने का एक प्रतिशत चान्स भी मेरा नहीं था, परन्तु जिस दिन से मैंने इस बगलामुखी कवच का पाठ प्रारम्भ किया, उस दिन से ही स्थिति मेरे अनुकूल होती चली गई, और एक महीने के अन्दर ही अन्दर इसने मुझे चमत्कार दिखा दिया। मैं अपने कार्य में पूर्णत: सफल हो गया हूं।

इसके बाद उन्होंने अपने कई मित्रों एवं परिचितों को इस स्तोत्र के बारे में बताया है, और अन्य लोगों ने भी इस स्तोत्र से पूरा-पूरा लाभ उठाया है।

जैसलमेर के खीची हरीसिंह ने भी इस स्तोत्र के बारे में एक आश्चर्यजनक किस्सा बताया था —

एक बार वे अपने भाजे की बारात से लौट रहे थे। बैलगाड़ियों में उनके परिवार की स्त्रियां तथा सामान लदा हुआ था। जैसलमेर की तरफ लुटेरे घूमते ही रहते हैं, अत: प्रत्येक व्यक्ति साथ में शस्त्र रखता ही है। खीची जी के पास में एक बन्दूक थी। जब वे बीच मार्ग में थे, तो लगभग 14-15 डाकुओं ने उन्हें घेर लिया और चारों तरफ से बन्दूकें उठा लीं। यह सब इतने अप्रत्याशित रूप से हुआ कि उन्हें तथा गाड़ीवालों को अपने शस्त्र उठाने का अवसर ही नहीं मिल सका।

खीची जी के पास और कोई साधन तो नहीं था। उन्होंने उस समय प्रभु को स्मरण करना ही उचित समझा और अनवरत रूप से बगलामुखी कवच का पाठ करना प्रारम्भ कर दिया। गाड़ीवाले तथा खीची जी ने लगभग पांच-सात मिनट के बाद ही देखा कि वे डाकू एक स्थान पर एकत्रित होकर कुछ विचार-विमर्श कर रहे हैं और दो-तीन मिनट बाद ही वे वहां से भाग खड़े हुए, न तो उन्होंने खीची जी को ललकारा और न किसी प्रकार की मार-काट ही की, आश्चर्य की बात तो यह है कि उस समय स्त्रियों के गहने आदि मिलाकर एक लाख से ज्यादा का सामान गाड़ियों में लदा हुआ था, यदि मार-काट भी होती तो डाकू संख्या में ज्यादा थे, अत: उस दिन किसी का भी बच पाना संभव नहीं था।

यह इस बगलामुखी कवच का ही प्रभाव था कि वे सकुशल डाकुओं से बच सके।

AnyScanner

अथ बगलामुखी कवचं प्रारभ्यते

श्रुत्वा च बगला पूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो।।
वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशकम्।
शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहि मां दु:ख-नाशनम्।।

श्री भैरव उवाच

कवचं श्रृणु वक्ष्यामि भैरवि! प्राणवल्लभम्।
पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगलामुखीकवचस्य नारद ऋषि: अनुष्टुप्छन्द: श्रीबगलामुखी देवता। ह्लीं बीजम्। ऐं कीलकम्। पुरुषार्थचतुष्टयसिद्धये जपे विनियोग:।।

अथ कवचम्

शिरो मे बगला पातु हृदयैकाक्षरी परा।
ॐ ह्लीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी।।
गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी।
वैरि जिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी।।
उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा।
परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी।।
हस्तौ चैव तथा पादौ पार्वती परिपातु मे।
विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे।।
पीताम्बरधरा पातु सर्वांगं शिवनर्तकी।
श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा।।
पातु पुत्रीं सुतञ्चैव कलत्रं कालिका मम।
पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा।।
रंध्रं हि बगलादेव्या: कवचं सन्मुखोदितम्।
न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धि प्रदायकम्।।
पठनाद्धारणादस्य पूजनाद्वांछितं लभेत्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्।।
पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्य: प्राप्य सादरा:।
वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा।।
महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तु य:।
तस्य सर्वार्थसिद्धि:! स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वति।।

।। अथ बगलामुखी स्तोत्रम्।।

विनियोग

श्री गणेशाय नमः।। श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः।। ॐ अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य नारदऋषिः। बृहतीच्छन्दः बगलामुखी देवता। मम सन्निहितानां दुष्टानां विरोधिनां वाङ्मुखपदजिह्वाबुद्धीनां स्तम्भनार्थे श्रीबगलामुखी देवता प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

कर न्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।। ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा।। ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। इति करन्यासः।।

हृदयादि न्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।। बगलामुखि शिरसे स्वाहा।। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।। जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्।। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।। इति हृदयादिषडंग न्यासः।।

अथ ध्यानम्

ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्। हस्तैर्मुदगरपाशवज्ररशनां संविभ्रतीं भूषणैर्व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।1।।

ॐ मध्ये सुधाब्धि मणिमंडपरत्नवेदी सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्। पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितांगीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्।।2।।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुं परिपीडयन्तीम्।। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।। 3।।

अथ स्तोत्रम्

ॐ चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगंडस्थलीं लसत्कनक चम्पकद्युतिमदिन्दु

बिम्वाननाम्। गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वां चलां स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस्स्तम्भिनीम्।।1।। पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपेसत्सिंहासन- मौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्। स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां बिभ्रतींमित्थं ध्यायति यान्ति तस्य सहसा सद्योथ सर्वापद:।।2।। देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते य: पीतपुष्पाञ्जलीन् भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मन्त्रीमनोज्ञाक्षरम्। पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद्बीजं स्मरेत्पार्थिवं तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत्तत्क्षणात्।।3।। वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानर: शीतति क्रोधी शाम्यति दुर्जन: सुजनति क्षिप्रानुग: खञ्जति। गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रित: श्रीर्नित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नम:।।4।। मंत्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते यंत्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते। मात: श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखे स्तम्भो भवेद्वादिनाम्।।5।। दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं भूभृत्सन्दमनं चलन्मृगदृशां चेत:समाकर्षणम्। सौभाग्यैकनिकेतनं समदृश: कारुण्यपूर्णामृत मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपु:।।6।। मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रायाशुधिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय। शत्रूञ्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौरांगि पीताम्बरे विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णे क्षणे।।7।। मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे। मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासोऽहं शरणागत: करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम्।।8।। संरम्भे चौरसंघे प्रहरणसमये बन्धने व्याधिमध्ये विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम्। वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा जने वा गच्छंस्तिष्ठन् त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीर:।।9।। त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंछेदिनी योषित्कर्षणकारिणी जनमन:सम्मोहसन्दायिनी। स्तम्भोत्सारणकारिणी पशुमन:सम्मोहसन्दायिनी जिह्वाकीलनभैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा।।10।। विद्या लक्ष्मीर्नित्यसौभाग्यमायु: पुत्रै: पौत्रै: सर्वसाम्राज्यसिद्धि:। मानो भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्तं तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण।।11।।यत्कृते जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि। दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोस्तु ते।।12।। पीताम्बरां द्विभुजां च त्रिनेत्रां गात्रकोमलाम्। शिलामुद्गरहस्तां च स्मरे तां बगलामुखीम्।। 13।।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिपु लोकेपु विश्रुतम्। गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्य चित्।।14।। नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्या: पठत्यादराद्धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले। राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणस्सर्पा मृगान्द्रादिकास्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मी: स्थिरा: सिद्धय:।।15।।

बगलामुखी साधना अद्वितीय है

मैंने अपने जीवन में जितना दु:ख, अभाव, कष्ट और दैन्य झेला है, उतना शायद ही किसी ने झेला होगा, मेरा गृहस्थ जीवन इतना दु:खदायी था, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकती। मुझे लिखते हुए कोई संकोच नहीं है, कि मेरे पति शराबी थे और वेश्यागामी भी। मैं उनको बहुत समझाती थी, परंतु उन पर कभी भी कोई प्रभाव नहीं हुआ।

मेरे तीन बच्चे हैं, बड़ी लड़की विवाह लायक हो गई है, और मुझे इसकी भी चिन्ता हो रही थी, ऐसी स्थिति में ही मेरा पूजा-पाठ की तरफ ध्यान बढ़ा, और मैंने धीरे- धीरे साधनाएं प्रारम्भ कीं, इन्हीं दिनों जोधपुर से प्रकाशित पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के संपर्क में आई, इससे मुझे बराबर मार्गदर्शन मिलता रहा।

दिसम्बर 82 के अंक में बगलामुखी साधना दी हुई थी, मैंने इसी साधना को सम्पन्न करने का निश्चय किया, मुझे साधना का कोई विशेष ज्ञान नहीं था, और न इससे पहले मैंने कभी कोई महत्त्वपूर्ण साधना सिद्ध ही की थी, परंतु मेरे मन में अनन्य निष्ठा और विश्वास था। इसी विश्वास के सहारे मैंने बगलामुखी साधना संपन्न करने का निश्चय कर लिया।

यह साधना तीक्ष्ण है, और इसमें विशेष सावधानी की जरूरत है, मैंने अपने पहिनने के वस्त्र पीले रंग में रंगवा लिए थे, कालकादेवी मंदिर के पास एक धार्मिक पुस्तकों की दुकान है, वहां साधना से संबंधित सामग्री भी मिलती है, अत: हल्दी से बनी हुई माला मैंने वहीं से प्राप्त की, पीला आसन भी खरीद लिया, और मन ही मन मैंने श्रीमाली जी को अपना गुरु मानकर साधना प्रारम्भ कर दी। उनका चित्र मुझे

पत्रिका के माध्यम से प्राप्त हो गया था, अत: उसी को मढ़वाकर साधना कक्ष में रख दिया था। निश्चित समय में मैंने मंत्र-जप प्रारम्भ कर दिया, मुझे सवा लाख मंत्र-जप करना था, और नित्य दस हजार-मंत्र जप करने में लगभग बारह घण्टे लग जाते थे, मैंने बच्चों को अपनी मां के पास भेज दिया था, और पति नौकरी के सिलसिले में 'टूर' पर गए हुए थे। प्रारम्भ में कुछ असुविधा अवश्य हुई, परंतु मैं प्रारम्भ से ही हठी स्वभाव की रही हूं, अत: मैंने इस साधना को पूरा करने का निश्चय कर ही लिया, पर पांचवें रोज एक आश्चर्यजनक घटना घटी, जिस कमरे में मैं साधना कर रही थी, उसी कमरे के एक कोने से काला सांप निकला, इससे पहले मेरे घर में न तो कभी सांप निकला था और न वहां सांप होने की सम्भावना ही थी, वह सांप धीरे-धीरे मेरी तरफ बढ़ रहा था, मैं सजग आंखों से उसे देख रही थी, यद्यपि मंत्र-जप बराबर चालू था, परंतु मन ही मन भयभीत अवश्य हो गई थी।

यह सांप मेरी तरफ आता हुआ पैरों से होकर कंधे तक पहुंच गया, उसका लिजलिजापन मैं अनुभव कर रही थी, और मन में कांप रही थी, कि यदि मैं थोड़ी सी भी हिली, तो यह अवश्य ही मुझे काट लेगा। लगभग आठ या नौ मिनट तक सांप कंधे पर पड़ा रहा, और बाद में पीठ की तरफ से नीचे उतर गया, और पुन: उसी दिशा की तरफ कोने में जाकर बैठ गया, जिस तरफ से वह आया था, मेरी एक नजर बगलामुखी के चित्र की ओर थी, और दूसरी नजर सांप पर थी, लगभग एक घण्टे तक वह वहां बैठा रहा, और फिर दरवाजे से होकर बाहर निकल गया।

शायद पाठक मेरे पत्र पर विश्वास न करें और चाहे आप लोग इस बात को मानें या न मानें, परंतु जिस दिन मेरे मंत्र-जप की आखिरी रात थी, उस रात्रि को भगवती बगलामुखी साक्षात् कमरे में प्रकट हो गईं, पीले वस्त्रों से सुसज्जित, सौम्य और तेजस्वी। मेरी उस समय आखिरी माला चल रही थी, मैंने मंत्र जप संपन्न किया और उस दिव्य मूर्ति के सामने हाथ जोड़ दिए। उसके चेहरे पर अखण्ड शांति और सौम्यता बनी हुई थी, उसका दाहिना हाथ ऊपर उठा, और मेरे सिर पर लगा, दूसरे ही क्षण मां बगलामुखी अंतर्ध्यान हो चुकी थीं, न तो उन्होंने मुंह से कुछ कहा और न मैं कुछ कह सकी, मेरी आंखों से भाव-विह्वलता में टप-टप आंसू अवश्य बह रहे थे।

इस घटना को मुश्किल से एक महीना बीता होगा, मेरे पति ने पूरी तरह से शराब छोड़ दी है, उनका प्रमोशन हो गया है, मेरी लड़की की सगाई बहुत ही अच्छे घर में अकस्मात हो गई है।

—गायत्री शर्मा, बंबई

शत्रु बाधा, कलह से मुक्ति हेतु
पीताम्बरा शक्ति साधना

प्रत्येक व्यक्ति जीवन को अपनी इच्छानुसार, आनन्द से जीना चाहता है, और यह आनन्द, तुष्टि प्राप्त करने के लिए निरन्तर इच्छा रखता है, और प्रयत्न भी करता रहता है, लेकिन क्या सब जगह ऐसा सम्भव होता है?

इसका यही उत्तर मिलेगा, कि ऐसा सम्भव नहीं हो पाता, वास्तविक जीवन में तो कष्ट आते हैं, बार-बार बाधाएं उपस्थित होती हैं, इनके कारणों की व्याख्या करने से इनकी शान्ति नहीं होती, इनको दूर करने के उपाय से ही आनन्द की रसधारा बह सकती है।

अमृत या विष

एक बड़े बर्तन में सुस्वादु, श्रेष्ठ दूध भरा है, और आप इसका पान करना चाहते हैं, इस दूध में खटाई की कुछ बूंदें डाल दें, तो क्या होगा? सारे के सारे पात्र का दूध अपना गुण खो देगा, फट जाएगा, पीने के लायक नहीं रहेगा, बाहर फेंकने के अलावा क्या चारा है?

अमृत में भी विष की बूंदें डाल दें, तो पूरा का पूरा अमृत विष समान हो जाता है। आपने बहुत प्रयत्न कर जीवन में अमृत कलश भरा, आनन्द का प्रवाह प्राप्त करने का प्रयत्न किया, लेकिन किसी ने विष की बूंदें डाल ही दीं।

इसी प्रकार जीवन में चार बड़े विष हैं, जिनके रहते जीवन में आनन्द आ ही नहीं सकता, ये चार जीवन के विष हैं — 1. शत्रु बाधा, 2. कलह, 3. तिरस्कार, 4. भय।

ये चारों स्थितियां विष हैं, और विष को अपने जीवन से दूर करने का, इस विष को नष्ट करने का एकमात्र उपाय है — '**गुरु कृपा**', गुरु कृपा से साधना में सिद्धि।

AnyScanner

बगलामुखी साधना

भगवती बगलामुखी की साधना यद्यपि शत्रुनाश हेतु स्वयंसिद्ध है किंतु स्वयं भगवती का यह स्वरूप उनके मूल स्वरूप की ही भांति सह व स्निग्ध है। बगलामुखी भयास्पद देवी नहीं अपितु पीताम्बर पट धारी भगवान श्री मन्नारायण की ही अभिन्न 'पीताम्बरी' है यही उनकी इस उपमा का रहस्य है। यद्यपि प्रभाव में उनके समान तीव्र कोई अन्य महाविद्या साधना भी नहीं है।

बगलामुखी देवी का स्वरूप ही दस महाविद्याओं में सबसे निराला है, त्रिनेत्री देवी अपने हाथ में मुग्दर, वज्र, पाश और शत्रु की जीभ लिए तीव्रतम रूप में तीनों लोकों को स्तम्भित कर देने वाला स्वरूप है।

ऐसा तीव्र स्वरूप और इस तीव्र स्वरूप में सोलह शक्तियां समाहित हैं, ये 16 शक्तियां हैं –

1. मंगला,	2. स्तम्भिनी,	3. जृम्भिणी,	4. मोहिनी,
5. वश्या,	6. बलाय,	7. अचलाय,	8. भूधरा,
9. कल्मषा,	10. धात्री,	11. कलना,	12. कालाकर्षिणी,
13. भ्रामिका,	14. मन्दगमना,	15. भोगस्था एवं	16. भाविका।

यह तीव्र साधना विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु की जानी चाहिए, ऊपर लिखे जो चार दोष हैं, उनके निवारण हेतु विशेष संकल्प लेकर यह प्रयोग करना चाहिए।

कई सामान्य साधक, जिन्हें पूजन विधि का पूर्ण ज्ञान नहीं होता, उनसे साधना में गलतियां हो सकती हैं, अतः शास्त्रों में विधान है, कि यदि पहले गुरु पूजन कर साधना की जाए, तो कोई साधनात्मक दोष नहीं रहता।

बगलामुखी साधना किसी भी रविवार को प्रातः प्रारम्भ करें।

विस्तृत साधना के तीन खण्ड हैं, इसमें प्रातःकाल, मध्याह्न काल तथा सायंकाल की साधना का विशेष क्रम है, और इस तांत्रोक्त साधना को इसी रूप में सम्पन्न करने से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

प्रातःकालीन क्रम

साधक स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठें और शिव स्वरूप गुरु का ध्यान करें।

यहां यह बात प्रमुख है, कि आप-अपने मस्तक अर्थात सहस्रार चक्र में गुरु को स्थापित कर रहे हैं।

गुरु ध्यान

श्वेतं श्वेतविलेपमाल्यवसनं वामेन रक्तोत्पलं,
विभ्रत्या प्रिययेतरेण तरसा श्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भुस्वरूपं परं,
हालालोहितलोचनोत्पलयुगं ध्यायेच्छिरःस्थं गुरुम्।।

अर्थात् "मस्तक ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रार चक्र में, मेरे गुरु देवता भगवान शिव विराजमान हैं, उनकी अंग कान्ति श्वेत है, श्वेत अनुलेपन, श्वेत वस्त्र और श्वेत पुष्प माला धारण किए हैं, दोनों हाथ अभय और वर की मुद्राओं से सुशोभित हैं, मुख पर सहज प्रसन्नता है, नेत्र हमारे दुःख रूपी विष का पान करने से लाल हैं, ऐसे सद्गुरुदेव का मैं बार-बार ध्यान करता हूं।"

अब साधक अपने सामने एक पात्र में गुरु पादुका स्थापित करे, गुरु पादुकाओं पर चन्दन और पुष्प अर्पित करे तथा अपने दोनों हाथ जोड़ कर गुरु पादुका मंत्र का दस बार जप करे –

गुरु पादुका मंत्र

।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें हं सं क्षं मं लं वं रं यं सं हं क्षं मं लं वं रं यीं ह्सौं स्हौं श्रीनिखिलेश्वरानन्द श्रीनाथपादुकां पूजयामि।।

जप समर्पण मंत्र– अब अपने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र से आगे की जाने वाली साधना-जप का समर्पण करे–

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् सुरेश्वर।।

अर्थात् "हे देव! हे सुरेश्वर!! आप गोपनीय से भी अति गोपनीय वस्तु के गोप्ता (संरक्षक) हैं, हमारे द्वारा किए गए इस जप को ग्रहण करें।प्रभो! आपकी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो।"

जप समर्पण के पश्चात् साधक यह चिन्तन करे कि गुरुदेव के चरणारविन्दों से अमृत की धारा झर रही है, और उसमें मैं आपाद मस्तक निमग्न हो गया हूं।

अब देवी की मूल पूजा का क्रम प्रारम्भ होता है, साधक अपने सामने ताम्र पात्र में विशिष्ट मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायुक्त बगलामुखी यंत्र स्थापित करे, और अपने हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प कर विनियोग करे –

संकल्प मंत्र

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी महामन्त्रस्य नारद ऋषिः बृहतीच्छन्दः श्री बगलामुखी देवता ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः मम सकलकामनासिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

अब यंत्र पूजन पुष्प, कुंकुम, रक्त चन्दन, अबीर, गुलाल, मौली से सम्पन्न करे, देवी के समक्ष नैवेद्य अर्पित करे।

अब देवी की सोलह शक्तियों का पूजन प्रारम्भ होता है, साधक इस हेतु निम्न एक-एक मंत्र पढ़ते हुए सोलह बगलामुखी शक्तियों की स्थापना स्वरूप सोलह बगलामुखी शक्ति चक्र अपने सामने यंत्र के बाहर एक वृत्त रूप मेंअर्धगोल घेरे मेंक्र स्थापित करे –

ॐ मंगलायै नमः **ॐ स्तम्भिन्यै नमः**
ॐ जृम्भिण्यै नमः **ॐ मोहिन्यै नमः**
ॐ वश्यायै नमः **ॐ बलायै नमः**
ॐ अचलायै नमः **ॐ भूधरायै नमः**
ॐ कल्मषायै नमः **ॐ धात्र्यै नमः**
ॐ कलनायै नमः **ॐ कालाकर्षिण्यै नमः**
ॐ भ्रामिकायै नमः **ॐ मन्दगमनायै नमः**
ॐ भोगस्थायै नमः **ॐ भाविकायै नमः**

प्रत्येक देवी शक्ति के आगे सुपारी रखें और अक्षत तथा सिन्दूर अर्पित करें।

जैसा कि पूर्व में लिखा है, बगलामुखी देवी का पूजन तीन क्रम में प्रातः, मध्याह्न एवं सायंकाल करना है।

प्रातःकालीन ध्यान

गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां सान्द्रां दृढपीनपयोधराम्।।
पीतभूषणभूषांगीं धृतचन्द्रार्धशेखराम्।
रत्नसिंहासनासीनामम्बां त्रैलोक्यसुन्दरीम्।।

त्रिभुवन सुन्दरी माता बगलामुखी को जो रत्न सिंहासन पर, कमल के आसन

पर विराजमान हैं, गम्भीर स्वभाव एवं मुख पर तीव्रता है, तीन नेत्र और चार भुजाओं वाली देवी बगलामुखी दाहिने भाग के दो हाथों में मुग्दर और पाश, वाम भाग के दो हाथों में जिह्वा एवं वज्र लिए हुए हैं, मस्तक पर अर्द्ध चन्द्राकार मुकुट है, भक्तों पर कृपा करने वाली ऐसी देवी बगलामुखी को अपनी सम्पूर्ण भक्ति से प्रणाम करता हूं!

ध्यान मंत्र का ग्यारह बार जप कर पीताम्बरा शक्ति माला से एक माला बगलामुखी गायत्री का जप करें –

बगला गायत्री मंत्र

।। ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्रायै विद्महे। स्तम्भनबाणायै धीमहि।

तन्नो बगला प्रचोदयात् ।।

अब इसी माला से बगला गायत्री के मूल मंत्र का जप सम्पन्न करें। यहां यह आवश्यक है, कि प्रात:कालीन क्रम में जितनी माला का जप करें। मध्याह्न क्रम तथा सायंकालीन क्रम में भी उतनी ही माला का जप करना आवश्यक है, साधकों को चाहिए, कि पांच माला मंत्र-जप प्रत्येक क्रम में अवश्य सम्पन्न करें।

बगलामुखी मंत्र

।। ॐ ह्लीं बगलामुखि, सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ फट्।।

मध्याह्न साधना क्रम

सबसे पहले मध्याह्न ध्यान मंत्र का ग्यारह बार जप करें, फिर एक माला बगला गायत्री मंत्र, शक्ति पूजन तथा बगलामुखी मंत्र की पांच माला का जप करें।

मध्याह्न ध्यान मंत्र

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविच्छेदनं,
भूभृद्भीशमनं चलन्मृगदृशां चेत: समाकर्षणम्।
सौभाग्यैकनिकेतनं मम दृशो: कारुण्यपूर्णेक्षणे,
शत्रोर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपु:।।

करुणापूर्ण नेत्रों वाली माता बगलामुखी! मेरे समक्ष आपका वह स्वरूप प्रगट हो, जो शत्रुओं का मारण, दुष्टों का स्तम्भन, भयंकर विघ्नों का निवारण, दरिद्रता का विनाश, राजभय का शमन करने वाला है। मेरे नेत्रों के लिए सौभाग्य का एकमात्र निकेतन है, तुम्हारे चरणों में सादर प्रणाम ।

सायंकालीन साधना क्रम

इस क्रम में सबसे पहले सायंकालीन ध्यान मंत्र का ग्यारह बार जप करें, फिर एक माला बगला गायत्री मंत्र, शक्ति पूजन तथा बगलामुखी मंत्र की पांच माला का जप करें –

सायंकालीन ध्यान

मातर्भंजय मद्विपक्षवदनं जिह्वाचलं कीलय,
ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामुग्रे गतिं स्तम्भय।
शत्रूंश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौरांगि पीताम्बरे,
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे।।

करुणा भरे नेत्रों वाली पीताम्बरा माता बगलामुखी! मेरे शत्रु पक्ष का मुखभंजन कर दो, उनकी वाणी और बुद्धि को कुंठित कर दो, शत्रु वर्ग की उन्नति, प्रगति को रोक दो, तथा मेरे उन शत्रुओं को अपनी गदा से चूर-चूर कर दो, हे माता! तुम इस भक्त के समस्त विघ्नों का हरण कर लो।

इस प्रकार साधक त्रिकाल पीताम्बरा शक्ति साधना सम्पन्न कर अपने सारे जप को, देवी को समर्पित कर दे और अपने कार्य में सिद्धि हेतु प्रार्थना करे।

समर्पण मंत्र

गुह्यातिगुह्यगोप्त्‌ त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि।।

बगलामुखी साधना का प्रभाव साधक को अवश्य प्राप्त होता है, और मैंने अपने अनुभव में यह पाया है कि चाहे बड़े से बड़ा संकट आ जाए और साधक स्नान कर एक माला बगलामुखी मंत्र का जप कर ले, तो उसे समस्या व संकट के हल हेतु मार्ग प्राप्त हो जाता है। ऊपर जो साधना विवरण दिया गया है, यदि साधक तीन रविवार तक इसी क्रम में साधना सम्पन्न कर ले, तो उसे बगलामुखी सिद्धि पूर्णरूप से प्राप्त हो जाती है, जिस प्रकार अग्नि का स्पर्श होते ही कपूर जल जाता है, उसी प्रकार जहां बगलामुखी पीताम्बरा की स्थापना होती है, उस साधक के जीवन से शत्रु दोष, भय दोष, राज्य बाधा दोष, तिरस्कार दोष, कलह दोष भस्म हो जाते हैं।

AnyScanner

जब बगलामुखी को मैंने अपने शरीर में धारण किया

निरन्तर तनाव, उहापोह, भटकाव, क्लेश और अपमानजनक स्थितियों के जीवन में बने रहने के पश्चात भी जब उनसे छुटकारे का कोई उपाय नहीं मिला, तब मैंने उनका सांसारिक रूप से उपाय प्राप्त करने की अपेक्षा किसी दैवी बल का आश्रय लेना अधिक उचित समझा। आरम्भ में तो मैं कहां-कहां नहीं भटका, किन -किन ज्योतिषियों, पंडितो, तंत्र-मंत्र के ज्ञाताओं और भगवे वस्त्र -धारियों के चक्कर में नहीं पड़ा,लेकिन उनसे कोई उपाय मिलना तो दूर,वह तो मेरी समस्याओं को ही न समझ सके। मेरी खिन्नता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई और मैं पहले से अधिक उदास रहने लगा। इन्हीं सब उलझनों में फंसकर मैं अपने व्यवसाय की गिरती स्थितियों को भी न संभाल सका, जिसका परिणाम यह रहा कि पहले मुझे जो कुछ आय हो भी जाती थी, वह भी समाप्त हो चली और धीरे-धीरे ऋण का बोझ मेरे ऊपर बढ़ने लगा। हालत यहां तक गिर गई कि मुझे दिन में भी मुहं छुपाने को बाध्य होना पड़ा। मेरे व्यवसाय के प्रतिद्वन्द्वी और मुझसे ईर्ष्या रखने वाले पड़ोसी मेरी दुर्दशा देखकर मन ही मन बेहद प्रसन्न थे।

मैं अपने जीवन में एकाएक आयी इस विपत्ति का कारण समझने में असमर्थ था। कभी-कभी मुझे आभास होता था, कि हो न हो इसके पीछे कोई तांत्रिक प्रयोग अथवा षडयंत्र है, लेकिन सही बात न जानने के कारण मैं कुछ भी कह सकने और कर सकने में असमर्थ था। इन्हीं तनावों ,और पता नहीं किन अज्ञात प्रभावों से मेरा सारा शरीर सूख गया था। मैं खिन्न, उदास, चिड़चिड़ा और हतोत्साहित

हो चला था। मेरा पारिवारिक जीवन अर्थाभाव और स्वभाव की कटुता के कारण निरन्तर तनाव युक्त रहने लग गया था।

मैं अपनी उन्नति के भरसक उपाय ढूंढ़ता ही रहता था। छोटे-मोटे प्रयोग, टोने -टोटके या जिस पीर, औलिया, फकीर ने जो उपाय बता दिया, उसे आजमाता ही रहता था, तरह-तरह के गण्ड़ों और ताबीजों से मेरी सारी बांह, गला और घर का पूजा स्थान भर गया। द्वार पर आये प्रत्येक साधु-संत का स्वागत-सत्कार कर उसके सामने मैं अपनी परेशानियां बताता-बताता रो पड़ता, लेकिन 'ढाक के तीन पात' वाली ही स्थिति बनी रही। इस बीच में मेरे ममेरे भाई दैव योग से मेरे घर आये, जो कि झांसी के रहने वाले थे, उन्होंने मेरी घरेलू स्थितियों के देखकर मुझे आग्रह पूर्वक अपने साथ चल कर एक बार दतिया स्थित पीताम्बरा पीठ के दर्शन करने को कहा। मैं तो पता नहीं किन-किन देवी-देवताओं के मंदिर में माथा रगड़-रगड़ कर एक तरह से टूट चुका था, लेकिन उनके आग्रह के आगे विवश हो गया और दतिया जाकर पीताम्बरा पीठ के दर्शन किये। लौटते समय मैं वहां उपलब्ध साहित्य भी अपने साथ लेता आया था, किंतु लौटने पश्चात् मेरी स्थितियों में और अधिक ह्रास आ गया। स्थिति यहां तक आ गई , कि मुझे अपना व्यवसाय बंद कर एक ऐसे व्यक्ति के यहां नौकरी करने को विवश होना पड़ा जिसने कभी मेरे व्यवसाय की उन्नति के दिनों में साथ रहकर कार्य सीखा था। यह मेरे लिये घोरतम अपमान की स्थिति थी, लेकिन परिवार की जिम्मेदारियों के बोझ का ध्यान करके मैं जीवन को समाप्त भी तो नहीं कर सकता था।

अपनें ममेरे भाई के पास से लौटने के बाद यह लाभ मुझे अवश्य हुआ, कि जो साधना साहित्य मैं अपने साथ लाया था, उसे पढ़ कर मन में यह बात जम गई थी कि यदि मेरी समस्याओं का जड़ से निदान हो सकता है तो केवल इन्हीं बगलामुखी देवी की साधना द्वारा, किंतु उन पुस्तकों में वर्णित ढ़ग से साधना की जटिलता और विस्तार से घबरा कर मैनें उसमें सलंग्न होने की कल्पना भी नहीं की। यह बात तो मैं मान चुका था, कि जिस साधना को प्राचीन काल से ही अनेक विद्वानों, मांत्रिको, एवं तांत्रिको ने एक स्वर से दारिद्रयहंता और अनिष्ट को स्तम्भित कर देने वाली कहा है, मिथ्या नहीं हो सकती। तभी मेरे ममेरे भाई उन्हीं दिनों पुन: किसी कार्य वश मेरे नगर आये और मुझसे भेंट होने पर मैंने उनसे यही बात कही। मेरे ममेरे भाई मुझसे इस विषय में उस समय तो कुछ नहीं बोले किंतु उन्होंने मुझसे दूसरे ही दिन जोधपुर चलने के लिए, तैयार हो जाने के लिये कहा। मैं दूसरे ही दिन उनके साथ जोधपुर

AnyScanner

के लिये प्रस्थान कर गया। आयु में बड़े होने के कारण मैं उनसे कुछ स्पष्ट पूछ नहीं पा रहा था, कि वे मुझे जोधपुर क्यों ले जा रहे हैं? रास्ते में जब ट्रेन में भीड़-भाड़ कुछ कम हुई तो उन्होंने खुद ही बताया, कि वह मुझे जोधपुर में डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली जी के पास मिलाने ले जा रहें हैं क्योंकि वे एक प्रख्यात ज्योतिषी के साथ-साथ तंत्र-मंत्र, आयुर्वेद, हस्तरेखा जैसी कई विधाओं के ज्ञाता हैं और जिन विकट स्थितियों में उन्होंने मुझे घर में जूझते देखा, उससे उन्होंने एक क्षण में निश्चय कर लिया था, कि अब मेरा उद्धार केवल गुरु-कृपा से ही संभव है।

जोधपुर पहुंचने पर जब हम **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली जी** से मिले तो उन्होंने मेरी कठिनाईयां सुन सर्वप्रथम मुझे गुरु दीक्षा देकर गुरु मंत्र जपने की आज्ञा दी और कहां कि वे मुझे आगामी नवरात्रि के अवसर पर विशिष्ट ढंग से बगलामुखी साधना संपन्न कराएंगे जिसकी विशेषता यह होगी, कि उसमें एक लाख अथवा पांच लाख बगलामुखी देवी के मंत्र नहीं जपने होंगे वरन पूज्य गुरुदेव को ही आधार बना कर एक रविवार अथवा अधिक से अधिक पांच रविवार की साधना करने पर वह साधना पूर्ण रूप से सिद्ध ही नहीं होगी अपितु शरीर में बगलामुखी देवी का ऐसा समाहितीकरण भी हो जायेगा कि फिर बगलामुखी देवी स्वयं ही पग-पग पर रक्षा करती हुई चलेंगी। समस्त दुख- दारिद्रय, अपमानजनक स्थितियां, पीड़ा, क्लेश, तिरस्कार, भय और षड़यंत्रों का समूल विनाश कर ही देगीं। नवरात्रि आने में लगभग 20 दिन शेष रह गये थे, जिससे मैंने वापस घर न जाकर वहीं रहते हुये गुरु साधना आरम्भ कर दी। **पूज्यपाद गुरुदेव** ने कृपा पूर्वक अपने सामीप्य में ही रहने का आदेश दे दिया था। नित्य प्रति गुरु मंत्र जप, गुरु-साधना एवं पूज्यपाद गुरुदेव के साक्षात् दर्शन होते रहने से मेरे मन के कलुष और कल्मष धुलने लग गये और धीरे-धीरे मेरा चित्त बगलामुखी देवी का ध्यान छोड़ गुरु चरणों में ही रम गया। अपने घोर व्यस्ततम क्षणों में भी अवकाश मिलने पर **पूज्यपाद गुरुदेव** मुझे बुला कर साधनाओं से संबंधित अनेक सूत्र और ज्ञान संबंधी विवेचन स्पष्ट करते रहते, जिनकी गहनता और पवित्रता में मैं निरन्तर डूबता हुआ, स्वयं को साक्षात गंगा में ही अवगाहन करने का सुख पाता रहता था।

फिर वह शुभ नवरात्रि भी आ गई जिसमें उन्होंने मुझे पूज्यपाद गुरुदेव की बताई विधि से गुरु चरणों को ही आधार बना कर विशिष्ट ढंग से बगलामुखी साधना सिद्ध करने की आज्ञा व अनुमति दी थी। वास्तव में तो मेरी साधना उनकी अनुमति और आशीर्वाद के पश्चात तत्क्षण सिद्ध हो ही गई थी, अब तो शेष किसी औपचारिकता

AnyScanner

व विधि का पालन करना ही लग रहा था। उस वर्ष संयोग से नवरात्रि के आरम्भिक दिनों में ही रविवार था। मैंने रविवार को प्रात: आम प्रचलित पद्धति, जिसमें पीत रंग को प्रमुखता दी जाती है, से अलग हट कर शुभ्र श्वेत वस्त्र धारण किये और साधना भवन में श्वेत आसन पर बैठा, क्योंकि इस साधना के आधार थे पूज्यपाद गुरुदेव जो अपने समस्त स्वरूप में शुभ्र-श्वेत हैं। तीन क्रमों की यह साधना जो प्रात:, मध्याह्न एवं सांय को सम्पन्न की जाती है, को मैंने संकल्प पूर्वक करना आरम्भ किया। मेरे सामने पूज्यपाद गुरुदेव की चरण पादुका स्थापित थी। मैंने सभी यंत्र-चित्र आदि का सामान्य पूजन कर पूज्य गुरुदेव की बताई विधि से साधना आरम्भ की।

साधना आरम्भ किए कुछ ही क्षण बीते होंगे कि साधना भवन का दरवाजा खुला और एक विशाल किंतु सौम्य मुख मुद्रा का देव पुरूष जैसा आभासित होता व्यक्ति साधना भवन में प्रविष्ट हुआ और चुपचाप एक ओर बैठ गया। कभी साधनाओं की विवेचना के कम में पूज्यपाद गुरुदेव ने एक गोपनीय सूत्र दिया था कि किसी भी महाविद्या साधना में यदि कभी ऐसा हो कि कोई विशाल भयानक आकृति प्रकट हो अथवा उसका बिम्ब आंखों के सामने उपस्थित हो जाए, तो विचलित नहीं होना, क्योंकि यह साधना में सफलता के संकेत हैं। प्रत्येक महाविद्या से संबंधित एक विशिष्ट भैरव होते हैं जिनकी उपस्थिति साधना में सफलता का पूर्व संकेत होती है। मैंनें मन ही मन उस देव-आकृति को प्रणाम किया और अपनी साधना में तल्लीन रहा। बीच में ध्यान किंचित भंग होने पर मैंने पाया कि वह भी ठीक इसी भांति साधना कम में तल्लीन हैं, जिस प्रकार मैं। वह मेरे ही क्रमों का अनुसरण कर रहे थे। प्रात: कालीन क्रम समाप्त होने के पश्चात मैंने कुछ देर विश्राम किया और द्वितीय क्रम के लिये अपने को सचेत किया। दूसरा क्रम भी मेरा निर्विघ्न एवं आह्लाद पूर्वक संपन्न हुआ। अब तीसरे क्रम की बारी थी। बाहर का पूरा वातावरण शांत हो चुका था और सांय का वातावरण था, साधना कक्ष में धीरे-धीरे हल्का अंधेरा उतर आया जिसमें निस्तब्ध मैं और वह बैठे रहे। मेरे मन में रोमांच और कौतुहल था, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह भी बताया था कि इसी क्रम के अंतिम चरण में मां भगवती बगलामुखी साधक के शरीर में समाहित होती ही हैं। मैंने पूर्व में कभी कोई महाविद्या साधना नहीं की और मैं इसी से अनुमान लगा रहा था कि कैसा होता होगा वह क्षण जब इस संपूर्ण चराचर की अधिष्ठात्री मां तेजस्वी और स्तम्भनकारी बगलामुखी देवी के विशिष्ट स्वरूप में साधक के रोम-रोम में उतर जाती है-जिनकी एक कृपा दृष्टि से

साधक के सम्पूर्ण दुखों और भय का विनाश हो जाता हैं, उनका रोम-रोम में समाहितीकरण कैसा अद्भुत और विलक्षण होता होगा, इन्हीं भावनाओं में मैंने तृतीय चरण की साधना आरम्भ की, प्रसन्नता और उद्रेक से मैं बार-बार ध्यानस्थ हुआ जा रहा था।

गुरु चरणों को आधार बनाकर की जाने वाली श्रेष्ठतम पद्धति जिसमें लाखों की संख्या में मंत्र जप करना आवश्यक नहीं . . .

मैं अपने सामने उनकी बन रही इस छवि को देख -देख कर मुग्ध होता जा रहा था और उनके स्वर्णमय शरीर की स्वर्णिम रश्मियों से मेरे रोम-रोम में समा गई दरिद्रता, दैन्य और तनाव छंटता जा रहा था। अन्त का यह चरण मेरे लिये भावनाओं की तीव्रता के कारण पूरा करना कठिन हो रहा था, किंतु पूज्यपाद गुरूदेव के श्री चरणों का ध्यान कर मैं किसी प्रकार अपने को स्थिरचित्त बनाये रखने का प्रयास कर रहा था। अंतिम क्षण बीतते-बीतते मुझे ऐसा आभास हुआ कि जैसे मेरे आज्ञा चक्र के समक्ष कई सूर्यो का प्रकाश जगमगा उठा है और मैं एक झटके से अपने आसन पर लुढ़क गया।

मेरा शरीर थरथरा रहा था और आंखों से अविरल अश्रुप्रवाह आरम्भ हो गया था। मैं समझने में असमर्थ था कि मेरी यह स्थिति क्यों हो गयी। मैं तो सर्वथा अज्ञानी हूं। भक्ति और चिन्तन रहित एक सामान्य साधक जिसके जीवन में न तो कोई धारणा रही, न भगवती बगलामुखी का बोध। वह कैसे इस स्थिति में आ गया, जो योगियों के लिये भी दुर्लभ कही गई है,जो भाव विह्वलता उच्च कोटि के साधकों को भी अप्राप्य रही है।

कुछ देर ऐसी स्थिति में रहने के बाद और अपने रोम-रोम में समा गयी अलौकिक शक्ति की तीव्रता को समेट लेने के बाद मैं किसी प्रकार सहज होकर बैठ गया। प्राय: रात्रि के क्षण आरम्भ हो चुके थे और वह देव पुरूष पता नहीं कब बाहर जा चुका था। सामने पूजा स्थान में जलते दीपक के मंद प्रकाश में मां भगवती बगलामुखी अपने चित्र में प्रकट तीव्रतम स्वरूप में मंद-मंद मुस्कराती लग रही थीं और मैं ऐसा प्रवाह अनुभव कर रहा था, जिसे शब्दों में वर्णित नहीं कर सकता। मुझे स्पष्ट लग था ,कि मेरे दुख-दैन्य और तनाव भरे जीवन के क्षण समाप्त हो चुकें हैं। प्रसन्नता के अतिरेक से रोम-रोम थिरक रहा था, विधिवत आरती एवं जप समर्पण करते ही जाकर **पूज्यपाद गुरुदेव** के चरणों से लिपट गया। उनका आशीर्वाद एवं वात्सल्य मय वरद हस्त अपने सिर पर स्पर्श प्राप्त कर साधना की पूर्णता प्राप्त की।

AnyScanner

दूसरे ही दिन मैं वापस अपने शहर के लिये रवाना हो गया और **पूज्यपाद गुरुदेव** के निर्देशानुसार अपनी बंद पड़ी दुकान को पुनः साहस के साथ खोल दिया। मेरे रोम-रोम में ऐसा विश्वास समा चुका था कि मुझे अपनी सफलता के प्रति कोई संदेह ही नहीं रह गया था और आश्चर्यजनक रूप से सप्ताह बीतते न बीतते जैसे-जैसे लोगों को मेरी दुकान के पुनः खुलने का पता लगा वे स्वतः आने आरम्भ हो गये। मरे प्रतिद्वन्दी मेरे स्वभाव व मेरे व्यापार में आये परिवर्तन से भौचक्के रह गये। मुझमें इतना आत्मविश्वास आ गया था कि मैं सीधे ग्राहकों की आंखों में आखें डाल कर इस प्रकार से बातें करने लगा था, कि वे मेरी दुकान से सामान खरीदने को बाध्य हो जाते थे। जब एक बार सफलता का क्रम आरम्भ हो गया तो फिर सहयोगी भी मिलने आरम्भ हो गये, जिनके सहयोग और पूंजी से मैने अपना व्यापार शीघ्र ही पहले की ऊंचाई में पहुंचा दिया। आश्चर्य तो यह रहा कि मेरे एक पार्टनर ने, जिसका बहुत सारा ऋण मेरे ऊपर बकाया था और जिसे वापस पाने के लिये उसने मेरे विरूद्ध मुकदमा भी दायर कर दिया, उसने स्वतः आकर मुझसे समझौता कर लिया। केवल समझौता ही नहीं किया बल्कि मुकदमा भी उठा लिया। निःसंदेह सब कुछ पुज्यपाद गुरुदेव का आर्शीवाद एवं मां भगवती बगलामुखी देवी की ही कृपा से संभव होता जा रहा था।

मानव जीवन में तो अनेक प्रकार की स्थितियां बनती-बिगड़ती रहती है। कहीं घात लगाकर आक्रमण करने वाले शत्रु होते हैं, तो कभी आकस्मिक करने रूप से घट जाने वाली दुर्घटनायें होती हैं। ऋण, पारिवारिक समस्याएं, जीवन के उतार-चढाव यह सब तो ऐसी स्थितियां है जिनसे व्यक्ति एक बार फिर भी अपने प्रयासों से जूझ सकता है, लेकिन जहां कोई भावी, अज्ञात अनिष्ट मंडरा रहा हो उसके निराकरण का तो एक मात्र उपाय इस दैवीय बल का आश्रय ही होता है और मैं अपने अनुभवों से दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं, कि ऐसी समस्त अप्रिय स्थितियों से निपटने के लिये अहैतुकी कृपा से बढ़कर कोई कृपा है ही नहीं, जिसके रोम-रोम में बगलामुखी समा जाय उसका तो विरोध करने वाला स्वतः पतन की ओर गतिशील हो जाता है ऐसा शास्त्रोक्त कथन भी है।

AnyScanner

सद्गुरु हल हूँ शीश के कहा एक प्रसंग

. . . बस एक ही प्रसंग क्यों? सद्गुरु तो अपने प्रत्येक शिष्य से सदैव किसी नूतन प्रसंग की चर्चा करते रहते है, क्योंकि सद्गुरु किसी एक तथ्य पर, किसी एक शास्त्र या धर्मग्रंथ को पकड़ कर जीवन भर उसी पर प्रवचन देने वाले व्यक्तित्व होते ही नहीं

. . . उनके समक्ष तो बिखरे होते है

जीवन के विविध पक्ष, विविध आयाम।

भौतिक भी, आध्यात्मिक भी।

इसी को स्पष्ट कर रही हैं कृतियां जिनमें एक ओर यदि ज्ञान व चेतना है, तो वहीं जीवन का उच्छ्वास, जीवन की धड़कन और जीवन की मधुरता का भी समावेश है . . .

ये अनमोल कृतियां

❁ भुवनेश्वरी साधना	15/-
❁ बगलामुखी साधना	15/-
❁ स्वर्ण सिद्धि	15/-
❁ तंत्र साधना	15/-
❁ मैं बाहें फैलाए खड़ा हूं	15/-
❁ मैं सुगंध का झोंका हूं	15/-
❁ हंसा उड़हू गगन की ओर	15/-
❁ अप्सरा साधना	15/-

:: सम्पर्क ::

मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान, डॉ.श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : 0291–32209, फैक्स : 0291–32010

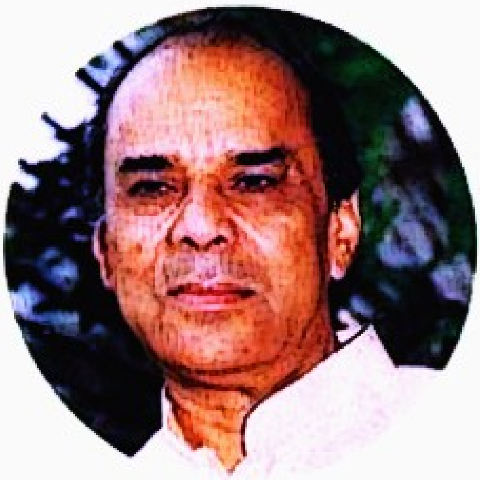

यों तो जीवन में सैकड़ों साधनाएं हैं और अगर देखा जाए तो हमारा जीवन भी हजार-हजार बाधाओं से भरा हुआ है, न चाहते हुए भी हमारे जीवन में शत्रु हैं, बाधाएं हैं, अड़चनें हैं, कठिनाइयां हैं, समस्याएं हैं। हम भूख से लड़ रहे हैं, हम गरीबी से लड़ रहे हैं, हम व्यापार की न्यूनता से लड़ रहे हैं, और चाहें या न चाहें तो भी हमारे शत्रु मारने के लिए तत्पर हैं, उनसे हम भयभीत हैं, फिर आखिर कौन सा रास्ता है जिसके माध्यम से हम निर्भीक रह सकें? शत्रु मानसिक भी हो सकते हैं, जो मन में चिन्ता, तनाव, परेशानी, बाधा व अड़चनें पैदा करते हों, शत्रु ऐसे भी हो सकते हैं जो रोग, दुःख, पीड़ा, दारिद्र्य देते हों और शत्रु भौतिक भी हो सकते हैं जो हमारे पड़ोसी हों, जो हमारे प्रति वैर भाव रखते हों, जो बरबाद करने पर तुले हुए हों, जो हमारे व्यापार को नुकसान पहुंचा रहे हों, जो हमारे पद-सम्मान पर आघात कर रहे हों, या मुकदमों में सफलता नहीं मिल रही है, तो प्रत्येक स्थिति में एक मात्र-केवल एक मात्र उपाय बगलामुखी साधना है।

विश्व के श्रेष्ठतम विद्वान समरफील्ड ने एक बार यह कहा था, कि मुझे यह आश्चर्य होता है, कि भारतवासी इतने भयभीत क्यों हैं, जब उनके पास बगलामुखी जैसा मंत्र है। बगलामुखी का एक मंत्र ही हजारों-हजारों शत्रुओं के विनाश के लिए पर्याप्त है।

जो साधक, शिष्य या पाठक इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु वितरित करने के लिए इस ग्रंथ श्रृंखला की सौ प्रतियां खरीदना चाहें, उन्हें मूल्य में विशेष रियायत दी जायेगी।

— प्रकाशक

AnyScanner